बूंदी के लबान में जल निकायों के शिलान्यास कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

आज यहाँ लबान में हमारे जल स्रोतों/निकायों,हमारे तालाबों, एनिकट के पुनरुद्धार/जीर्णोद्धार के शिलान्यास और लोकार्पण के कार्यों के बारे में आपको बताते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है।

कोटा और बूंदी में कुल 62 करोड़ रुपए की लागत से 54 तालाबों के निर्माण की स्वीकृति मिल चुकी है। और आने वाले समय में यहाँ 26 करोड़ रुपए की लागत से 10 और तालाबों का निर्माण होगा। ऐसी हमारी कार्य योजना है।

करीब साढ़े 43 करोड़ रुपए की लागत से कोटा में 38 जल निकायों का जीर्णोद्धार, नवीनीकरण और मरम्मत की जा रही है।इसी तरह बूंदी में करीब 19 करोड़ रुपए की लागत से 16 जल निकायों, तालाब, एनिकट का जीर्णोद्धार/पुनरुद्धार कार्य की शुरुआत आज की जा रही है।

जल स्रोतों के इस पुनरुद्धार कार्य से दोनों जिलों में 70 गाँवों को सीधा फायदा मिलेगा। आपको इन प्रोजेक्ट्स के लिए बधाई देता हूँ।

साथियों, आजादी के बाद पहली बार कोटा में इतने जल निकायों/स्रोतों का पुनरुद्धार हो रहा है।

हमारे तालाब जो कभी गाँव-गाँव की पहचान हुआ करते थे, आज उनकी यह स्थिति नहीं रही।

अपने तालाबों को नया जीवन देने के लिए, ताकि आमजन को भी सुविधा मिले, हमारे पशुधन को भी लाभ हो; इन उद्देश्यों के साथ यह कार्य किया जा रहा है।

इससे क्षेत्र में पानी की स्थिति बेहतर होगी, ज़मीन में पानी का स्तर बढ़ेगा, प्रकृति को लाभ होगा और सीधे तौर पर 54 से अधिक गाँवों की जनता को लाभ होगा। गाँव-गाँव के समावेशी विकास के लिए यह आवश्यक कदम है।

आज जिस तरह हम देखते हैं कि पानी की कमी हो रही है। दुनिया में कई हिस्सों में पेयजल पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पा रहा है, उसे देखते हुए हम सबको जल संरक्षण की दिशा में काम करना होगा। यह हर एक व्यक्ति का दायित्व है।

भारत सरकार की "प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना" (PMKSY) के हर खेत को पानी (HKKP) उपयोजना के तहत सिंचाई की सुविधा बढ़ाने, पेयजल, भूमि जल स्तर सुधारने एवं अन्य सामुदायिक प्रयोजन हेतु यह योजना प्रारम्भ की गई हैं।

इस योजना के तहत तालाबों के जीर्णोद्धार, मरम्मत एवं सुदृढ़ीकरण के लिए पंचायती राज एवं जल संसाधन विभाग के तालाब सम्मिलित किये गये हैं।

जल निकायों, तालाबों के संरक्षण के इन कार्यों से कोटा-बूंदी लोकसभा क्षेत्र के 70 से अधिक गांवो की 4500 हैक्टेयर भूमि को सिंचाई हेतु अतिरिक्त जल की उपलब्धता हो सकेगी। इसके अतिरिक्त सतही जल की उपलब्धता से आस-पास के क्षेत्र में भू-जल स्तर में बढ़ोत्तरी तथा पशु-पेयजल हेतु पानी की उपलब्धता हो सकेगी।

साथियो, कभी तालाब ग्रामीण जन जीवन का एक जरूरी हिस्सा हुआ करते थे। पीने के पानी की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ, हमारे तालाब हमारे सामाजिक ताने-बाने से भी जुड़े थे। धार्मिक और पेयजल दोनों उद्देश्यों के लिए तालाबोंका संरक्षण किया जाता था। लेकिन जैसे-जैसे गांवों में हैंडपंप और अब पाइप से पानी आने लगा है, ये स्थानीय जल निकाय धीरे-धीरे गायब होने लगे।

जल संरक्षण में तालाबों की अहम भूमिका है, लेकिन आधुनिकता की दौड़ में तालाबों का वजूद ही खत्म होता जा रहा है। कई जगह तालाबों पर कब्जा कर लिया गया है, जो तालाब बचे हैं, उनकी हालत खराब है। तालाबों के विलुप्त होने के कारण भूजल स्तर लगातार गिरता जा रहा है।

भारत का कोई ऐसा गांव, कस्बा और शहर नहीं, जहां बड़ी तादाद में तालाब न रहे हों। खासकर रजवाड़ों के वक्त, तालाब राज्य की खेती-किसानी के ही नहीं, प्यास बुझाने के सबसे बेहतर जलस्रोत के रूप में मौजूद थे।

लेकिन पिछले 70 - 75 सालों में देश के लाखों तालाब सूख गए या उन पर अतिक्रमण करके उनका नामोनिशान मिटा दिया गया। जो तालाब कृषि-बागवानी जीवन-संस्कारों और पर्यावरण को बचाए रखने के आधार बने हुए थे, उनके प्रति लोगों में उपेक्षा की ऐसी नकारात्मक प्रवृत्ति पैदा हुई कि देखते-देखते अपना अस्तित्व ही खो बैठे।

असंख्य तालाबों पर अतिक्रमण कर लिया गया। जहां पहले तालाब थे, वहां अब इमारतें, घर, खेल के मैदान या कूड़े के ढेर हैं।

बढ़ते जल संकट के साथ बदलते परिवेश में गांव के तालाबों का संरक्षण और पुनरुद्धार जरूरी हो गया है।

पुराने समय में यह कहा जाता था कि खेत तालाब से पानी पीता है और इंसान कुएं से। लेकिन आज लोग तालाब के पानी का इस्तेमाल नहीं करते हैं। क्योंकि आज तालाब का पानी उपयोग करने लायक रहा नहीं है। आज पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमारे पास हैंडपंप, बोरवेल और नल है। अब तो बस तालाबों के आसपास कूड़ा डाला जाता है। लेकिन इससे तालाब के साथ-साथ हमारे गांव की खूबसूरती भी मर गई है।

दो साल पहले हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने “अमृत सरोवर योजना” के माध्यम से देश भर के हर एक ज़िले में 75 सरोवर बनाने का आह्वान किया था। उनके इस आह्वान से आज देश में तालाबों की स्थिति में क्रांतिकारी सुधार आया है।

आज हमें यह समझने की जरूरत है कि पानी के भूमिगत भंडार कभी भी खत्म हो सकते हैं। हमारे प्राकृतिक जल स्रोत जैसे तालाब इसलिए भी जरूरी है, ताकि इनके माध्यम से पानी का रिचार्ज होता रहे। बारिश का पानी तालाबों के माध्यम से भूमि के अंदर जाता रहे। पक्की सड़क बन जाने के बाद, या तालाबों को कूड़े - कचरे से भर देने के बाद बारिश का पानी भूमि के अंदर नहीं जा पाता है।

हाड़ौती की धरती को माँ चम्बल का आशीर्वाद है। हमारे यहाँ सदानीरा माँ चम्बल का वरदान है। लेकिन जैसे हम देखते हैं कि आज हमारे ही देश में बैंगलोर में पीने के पानी का बड़ा संकट है, महानगरों में ऐसी स्थिति है।

आने वाले 100-50 साल में भी ऐसी स्थिति कभी हमारे गाँव-कस्बों में नहीं आए, इसके लिए हमें व्यवस्था करनी होगी।

आने वाले समय में हमें पेयजल संकट का सामना न करना पड़े इसके लिए जरूरी है कि इसे सहेजने के लिए सभी प्रयास करें। लोग पानी के सदुपयोग की आदत डालें। पानी एक ऐसी जरूरत जिसके बिना मानव जीवन की कल्पना भी संभव नहीं है। पानी की एक-एक बूंद कीमती है, यह सब जानते हैं; लेकिन लोग पानी का प्रयोग करते समय शायद इसे भूल जाते हैं।

प्रकृति को गतिमान बनाने के लिए सब से प्रमुख कारक जल ही है। इसलिए अगर प्रकृति व मानव को बचाना है तो पानी को भी बचाना होगा।

देखने में आता है कि कई जगह पाइपें फटी होती हैं, जिनसे पानी व्यर्थ बहता रहता है। कई घरों में पानी की टंकियों में से पानी व्यर्थ बहता है। इस प्रकार की दिक्कतों को तत्काल दूर किया जाना चाहिए ताकि व्यर्थ बहने वाला पानी किसी जरूरतमंद के काम आ सके। कई लोग पीने के पानी से अपने नए भवन/घर की तराई करते हैं, जो गलत है। आज हर एक व्यक्ति संकल्प लें कि पानी को बर्बाद नहीं होने देंगे। यदि हर व्यक्ति जागरूक होगा तभी जल संरक्षण की दिशा में सकारात्मक पहल हो सकेगी।

केंद्रीय मौसम विज्ञान के मुताबिक देश भर में कुल वार्षिक बारिश 1,170 मिमी होती है, और वह भी महज तीन महीने में। लेकिन इस अकूत पानी का इस्तेमाल हम महज बीस प्रतिशत ही कर पाते हैं यानी अस्सी प्रतिशत पानी को हम बगैर इस्तेमाल किए यों ही बह जाने देते हैं। अगर बरसात के पानी को संरक्षित करने की योजना पर अमल करें, तो पानी की किल्लत का बहुत बड़ा समाधान हो सकता है।

मुझे आशा है कि हम सभी लोग पानी को बचाने के महत्व को समझेंगे। बूंदी को बावड़ियों का शहर भी कहा जाता है। हम अपने तालाब, जोहड़, बावड़ियों, एनिकट की देखरेख करेंगे। हम अपनी परंपरा को बचाए रखेंगे। ताकि आज के लिए पानी रह सकें, और आने वाले कल में भी कोई कमी ना हो। इसी संदेश के साथ एक बार फिर आप सभी लोगों को बहुत बहुत शुभकामनाएं।